जाना होता है। अगर वह व्यक्ति एस. पी. को रिपोर्ट नहीं करता है तो एस. पी. चेकपोस्ट को इनफार्म करता है और सर्च शुरू करता है। इसके बाद डिटेक्ट करके कार्यवाही शुरू करते हैं। इसलिए मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि राजस्थान बार्डर के बारे में हम काफी स्टेप्स ले रहे हैं और आसाम जैसी स्थिति आने का सवाल ही नहीं है।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी : अध्यक्ष महोदय, बर्मा, सीलोन, अफ्रीका आदि से लोग हिन्दुस्तान आ रहे हैं। एक हिन्दुस्तान में कितने देशों के लोग आकर बसेंगे यह मैं पूछना चाहता हूं। जो भी बाहर से आते हैं वे गरीबी की रेखा से नीचे हो जाते हैं। क्या इनको यहां रखने का इरादा है? क्योंकि मन्त्री जी ने कहा है कि मामला विचाराधीन है। इसका मतलब है कि वे यहां पर कुछ लोगों को परमीशन देने वाले हैं।

MR. SPEAKER : Shri Anantha Ramulu Mallu—Absent. Shri Zainul Basheer—Absent. Question No. 623—Shri Ramavtar Shastri.

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी : अध्यक्ष महोदय, मेरा जवाब नहीं आया।

(*Interruptions*)

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के अन्तर्गत चल रहे प्रशिक्षण केन्द्र

* 623. **श्री रामावतार शास्त्री :** क्या प्रधान मंत्री निम्नलिखित जानकारी दर्शाने वाला विवरण सभा पटल पर रखने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग तथा उससे सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के अन्तर्गत कुल कितने और कौन-कौन से प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं;

(ख) उन प्रशिक्षण केन्द्रों में कुल कितने प्रशिक्षण कोर्स चलाए जा रहे हैं;

(ग) उपरोक्त कितने प्रशिक्षण कोर्सों में हिंदी माध्यम का विकल्प दिया गया है;

(घ) क्या इन प्रशिक्षण कोर्सों की परीक्षाओं में भी हिंदी माध्यम का विकल्प दिया गया है; और

(ङ) यदि नहीं, तो ऐसा विकल्प कब तक देने का विचार है?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा, अन्तरिक्ष, इलैक्ट्रानिकी और महासागर विकास विभागों में राज्य मन्त्री (श्री शिवराज वी० पाटिल : (क) एक (सर्वे ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, हैदराबाद)

(ख) 45

(ग) यह विकल्प सारे 45 प्रशिक्षण पाठ्क्रमों में उपलब्ध है हॉलाकि इसे बहुत ही कम इस्तेमाल में लाया जाता है।

(घ) जी, हाँ

(ङ) ऊपर भाग 'घ" में दिये गये उत्तर को ध्यान में रखते हुए लागू नहीं होता।

श्री रामावतार शास्त्री : अध्यक्ष जी, राजभाषा अधिनियम अपनी जगह पर और सरकार की गति अपनी जगह पर है। मैं उसी गति में आपकी गति को मिलाना चाहता हूं। राजभाषा अधिनियम की छीछालेदर आपके विभिन्न विभाग के लोग एवम् विभिन्न मंत्रिमण्डल के लोग करते रहते हैं। खैर, वह तो एक अलग बहस का विषय है। आपने कहा कि पूरे हिन्दुस्तान के आपके लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए केवल एक ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट हैदराबाद में है। मैं यह जानना चाहूंगा कि इतने बड़े देश की आवश्यकता को पूरा करने के लिए केवल एक प्रशिक्षण केन्द्र को आप यथेष्ट या पर्याप्त समझते हैं? अगर नहीं तो क्या और प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने के लिए आपके यहां कोई योजना है? अगर है, तो वह क्या है?

श्री शिवराज वी० पाटिल : इसमें थोड़ा सा खुलासा देना जरूरी हो गया है। साइन्स और टेक्नोलोजी डिपार्टमेंट के आधीन बहुत सारी संस्थाएं आती हैं। उनको आटोनामी दी

गई है। इसलिए, प्रश्न का उत्तर ऐसा दिया गया है कि हमारी संस्था जो साईन्स और टैक्नोलॉजी से संबंधित है, उसके अन्दर ट्रेनिंग की व्यवस्था है। दूसरी जो संस्थाएं हैं उनकी ट्रेनिंग के बारे में इसमें उल्लेख नहीं किया गया है। साईन्स और टैक्नोलॉजी डिपार्टमेंट से संबंधित जो संस्था है, उसी के संबंध में उत्तर दिया गया है। अगर, ऐसा नहीं होता तो फिर उसमें से अलग-अलग प्रश्न निकल सकते थे। यह जो सर्वे ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट है, उसकी ओर से यहां पर ट्रेनिंग की व्यवस्था है। दूसरी जो संस्थाएं हैं, उनमें जो कुछ होता है उनको ट्रेनिंग ही कहा जायेगा, ऐसा नहीं है। वहां रिसर्च, सेमीनार्स और चर्चाएं होती हैं। सर्वे ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट में ट्रेनिंग होती है। उसके कोर्सेज कितने हैं, यह भी बताया गया है। उन कोर्सेज में हिंदी भाषा का प्रयोग करने में कोई बाधा नहीं है। वे चाहें तो कर सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि सिर्फ हमारे पास एक ही इन्स्टीट्यूट है और एक ही इन्स्टीट्यूट में हम ट्रेनिंग दे रहे हैं। ऐसा, उसका अर्थ नहीं निकलता।

श्री रामावतार शास्त्री : अध्यक्ष जी, 45 कोर्स इनके उत्तर के मुताबिक चल रहे हैं। मैं यह जानना चाहूंगा कि इन 45 कोर्सेज के पाठ्यक्रम हिंदी में हैं या नहीं या केवल अंग्रेजी में हैं ? जो पढ़ाते हैं वे किस भाषा में लैक्चर देते हैं ? सिर्फ अंग्रेजी में देते हैं या हिंदी में भी देते हैं ? अगर सारे पाठयक्रम अंग्रेजी में हैं और लैक्चर भी अंग्रेजी में दिए जाते हैं तो आप किस आधार पर उम्मीद कर सकते हैं कि जो हिंदी भाषी हैं वे हिंदी में लिखना चाहें तो किस प्रकार से लिखेंगे ? इसका अन्दाज बता दीजिए। आप पढ़ाते हैं अंग्रेजी में और यह उम्मीद करें कि वे हिंदी में उत्तर पुस्तिका लिखें, तो क्या यह तमाम लोगों के लिए सम्भव है या कुछ लोगों के लिए हो सकता है ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : यह जो प्रशिक्षण होता है, इसमें देश के अलग-अलग हिस्सों के लोग आते हैं। प्रशिक्षण के समय अंग्रेजी भाषा में लैक्चर देते हैं। यदि, कोई विद्यार्थी या प्रशिक्षण लेने वाला कोई बात हिंदी में कर दे और लैक्चर देने वाले हिंदी जानते हैं तो उसका उत्तर भी हिंदी में दिया जाता है। इसके साथ-साथ यदि किसी की इच्छा हो कि किसी प्रश्न का उत्तर हिंदी में दिया जाए तो उसके लिए भी इजाजत दी जा सकती है। कुछ किताबें हैं हिंदी में छपी हुई, उसका भी वह उपयोग कर सकते हैं। मगर यह जो इंस्टीट्यूट है जहां पर देश के अलग अलग क्षेत्र से लोग आते हैं। उनके लिये, अगर कोई खास विद्यार्थी आये, तो उसको प्रशिक्षण हिंदी में ही देने का विचार किया जा सकता है। उसमें कोई बाधा नहीं है।

श्री रामावतार शास्त्री : हिन्दी भाषियों के लिए मैंने सवाल पूछा है। जो अहिन्दी भाषी हैं वह अंग्रेजी में लिखें मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन जो हिन्दी भाषी लोगों के लिये आप कहते हैं कि हो सकती है। तो डेफिनेट बताइये कि हिन्दी के कोर्स आपके चलते हैं कि नहीं ? मैंने साफ पूछा है, और हिन्दी में लैक्चर होते हैं कि नहीं हिन्दी भाषियों के लिये ? यह तो बता नहीं रहे हैं। मैंने अहिंदी भाषियों के लिये सवाल नहीं पूछा है।

श्री शिवराज वी० पाटिल : मैंने कहा है कि हिन्दी भाषा का उपयोग करने की व्यवस्था है। मगर हिन्दी भाषा का उपयोग करने के लिये कोई सामने नहीं आये, जैसा मैंने (ग) के उत्तर में बताया . . .

श्री रामावतार शास्त्री : वहां व्यवस्था है कि नहीं ? लोग पढ़ाते हैं कि नहीं इसका स्पष्ट उत्तर दीजिये।

अध्यक्ष महोदय : वह कहते हैं कि कोई पढ़ने वाला ही नहीं है।

श्री रामावतार शास्त्री : पढ़ाते ही नहीं है तो कैसे कोई पढ़ेगा ?

अध्यक्ष महोदय : कोई ऐसा आदमी है ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : मैंने कहा है कि 45 कोर्सेज जो हैं उसमें हिन्दी की व्यवस्था हो सकती है।

श्री रामावतार शास्त्री : 'सकती' की बात कह रहे हैं। इसी से हमारा संदेह है कि अभी कोई व्यवस्था वहां नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : हो सकती "नहीं"। है कि नहीं।

श्री शिवराज वी० पाटिल : मैंने कहा हिन्दी में किताबें लिखी गई हैं। अगर कोई कहे कि मैं हिन्दी में उत्तर देना चाहता हूं तो हम उसको इजाजत देंगे।

अध्यक्ष महोदय : हिंदी पढ़ने वाला है कोई, लेकिन कोई हिन्दी जानने वाला न हो जो कि पढ़ाने वाला है, तो उसके लिये हिन्दी का कोई प्रबन्ध है कि नहीं ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : मैंने कहा है कि हिन्दी में किताबें हैं, उसको उत्तर देने की इजाजत है।

श्री रामावतार शास्त्री : यह सरकार राजभाषा के प्रति कितनी सजग है यह इससे स्पष्ट होता है।

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Sir, I want to throw some light. The problem is this. In India on various subject, particularly on Science and Technology the quality books in Hindi or in other Indian languages are not generally available. That is why, most of the students, even if they very much like to learn in Hindi or any other Indian language, they do not generally offer-because of the lack of books.

I would like to know from the Minister, because of this difficulty what steps the Government is contemplating so that the quality books on Science and Technology in Hindi and other Indian languages are made available to the students whereby they can learn the subject in their own language and the lectures can also be delivered through Hindi or any other Indian languages ?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : Sir, we have to make distinguish between the basic literature and the literature which is available for the training purposes. The material which is available for the training purposes, to some extent has been translated into Hindi and other Indian languages and it is available.

But the translation of the basic literature has to be done by those who are well-vested in Science and Technology as well as in Hindu or other Indian languages. This is our difficulty and if it is possible to get well-versed persons, it will be done. But without looking into all the details and the difficulties, it would not be possible to give any assurance or promise on the floor of the House.

For a question that to what extent the training information is available in Hindi and other Indian languages, I have already said that we have pamphlets, book-lets and the books which are available for the purpose of training and if anybody is coming forth asking for instructions in Hindi, that kind of instructions can be made available to him. But if nobody is coming forth, why should be spend the money on all these arrangements ?

श्री बी० डी० सिंह : अध्यक्ष जी, यह जो, उत्तर दिया गया है, अभी तो मंत्री जी सफाई कर रहे हैं, लेकिन जो उत्तर दिया गया है वह तथ्यों से परे है। आपने (ग) में कहा है कि 45 प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध है लेकिन इनका इस्तेमाल बहुत कम होता है। बहुत कम नहीं, बिल्कुल नहीं होता। इस्तेमाल होता ही नहीं है। अगर कुछ इस्तेमाल होता तो आपने भाग (घ) में यह कहा है कि जो हिन्दी माध्यम से ही परीक्षा देना चाहते हैं, उनको सुविधाएं उपलब्ध हैं। आप बतायें कि वहां हिन्दी माध्यम से कितने परीक्षार्थियों को मौका दिया गया ?

अध्यक्ष महोदय : यह तो दिया गया है। That is what he has said, he has already replied.

श्री बी० डी० सिंह : एक भी नहीं है।

श्री सत्यनारायण जटिया : मैं आपसे यह कहना चाहता था कि प्रधान मन्त्री ने इससे आगे बढ़कर बात कही है और यह कहा है कि सरल संस्कृत हमारी भाषा का एक अच्छा माध्यम

बन सकती है। इसलिए मेरा कहना था कि हिन्दी माध्यम के उपयोग को अधिक हतोत्साहित मत कीजिए, इसके उपयोग को जितना करा सकते हैं, कराइये।

परमाणु बिजली की अधिष्ठापित क्षमता और वास्तविक उत्पादन

*624. **श्री सत्यनारायण जटिया** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि परमाणु बिजली की अधिष्ठापित क्षमता और वास्तविक उत्पादन की नवीनतम स्थिति क्या है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, ATOMIC ENERGY SPACE, ELECTRONICS AND OCEAN DEVELOPMENT (SHRI SHIVRAJ V. PATIL) : The installed capacity of nuclear power stations in operation is 860 MWe. The first unit of the Tarapur Atomic Power Station is shut down for refuelling and maintenance, and unit II is operating at about 160 MWe. The first unit of the Rajasthan Atomic Power Station is shut down for maintenance and repairs, and unit II is operating at about 180 MWe.

श्री सत्यनारायण जटिया : अध्यक्ष महोदय, मैंने जो मूल प्रश्न किया था, उसको तोड़-मरोड़ कर 2, 3 भागों में कर दिया गता है और उसकी भावना नष्ट कर दी गई है जो मैं जानना चाहता था।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो हम काम् करना चाहते हैं, लगातार परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में ह्रास हो रहा है।

एक माननीय सदस्य : उड़जा कह रहे हैं ?

श्री सत्यनाराण जटिया : उड़ जा नहीं ऊर्जा।

अध्यक्ष महोदय : खुर्जा की बात तो नहीं कर रहे हैं ?

श्री सत्यनारायण जटिया : मैं परमाणु ऊर्जा की बात कर रहा हूं।

हमारे देश में कुल ऊर्जा के उत्पादन का अनुपात 1974 में ताप विद्युत से 54, जल विद्युत से 42 और परमाणु ऊर्जा से 4 था। इसका मतलब यह है कि जो 4 का अनुपात था वह 1983 में आते-आते ताप का 61, जल का 37 और परमाणु ऊर्जा का 2 रह गया।

परमाणु ऊर्जा के विकास की दृष्टि से 1974 में जो स्थिति थी वह 1983 में आधी रह गई जिसका कि विकास होना चाहिए था।

जो राजस्थान के आंकड़े आपने दिये हैं, उसमें आपने कहा है कि हम उस इकाई को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं। परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि राजस्थान के परमाणु बिजली घर की एक इकाई 4 मार्च 1982 से बन्द है। सारे देश में जितने परमाणु ऊर्जा घर हैं, वह अपनी उत्पादन क्षमता का उत्पादन नहीं कर रहे हैं। परमाणु ऊर्जा घर कोटा की ईकाई उत्पादन नहीं कर रही है। ठीक से वहां एफीशियेंट उत्पादन हो सके, इसके लिये आप क्या करने जा रहे है ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : कोटा के परमाणु बिजली घर की मशीनरी में कुछ बिगाड़ आया है। इस ऊर्जा घर को हमारे सांइटिस्टों और हमारे देश के लोगों ने अपने बल-बूते पर बनाया है। इसमें 80 प्रतिशत अपने यहां की टैक्नोलाजी और ज्ञान का उपयोग किया गया है। पहले तारापुर का बनाया गया और दूसरा यह बनाया गया है।

इसके अन्दर कुछ मशीन में कमियां हैं जिन्हें दुरुस्त करने का काम किया जा रहा है। वहां के टरबाइन में प्ले के बिगड़ जाने की वजह से और दूसरी जगह पर मशीन में कुछ बिगाड़ होने की वजह से इसे बन्द किया है। जो ज्ञान हमको इस बारे में प्राप्त हुआ है, उसका भी उपयोग कर रहे हैं। इसके लिये अगर बाहर से टरबाइन वगैरह लाने की जरूरत हुई तो उसकी भी व्यवस्था करेंगे। हमें ऐसा लगता है कि आगे चलकर जो हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका उपयोग करने के बाद